ॐ श्रीगणेशाय नमः
ॐ नमः शिवाय
अमरनाथमाहात्म्यम्

देवाधिदेव भगवान् महादेव का नाम अमरेश्वर अथवा अमरनाथ कैसे पड़ा ? अमरनाथ साक्षात् लिङ्गस्वरूप हैं। भृङ्गीश संहिता के "अमरनाथमाहात्म्य" नामक दशम पटल में इसका एक प्रसङ्ग वर्णित है। कहते हैं कि नियतिवश उत्पन्न इस सृष्टि में इन्द्र आदि देवता भी मृत्यु के भय से ग्रस्त थे। मृत्यु उनको भी अपना ग्रास बनाती थी[1]। इससे व्याकुल वे सभी एकत्रित होकर गुफा में स्थित भगवान् शिव की शरण में पँहुचे और परमप्रीतिपूर्वक उनकी स्तुति करने लगे[2]।

भगवान् शिव के पूछने पर देवताओं ने अपनी व्याकुलता का कारण बताया कि मृत्यु हमें भी अपना ग्रास बना रही है। इसका कोई उपाय कीजिए। तभी भगवान् शिव ने स्वयं अपने सिर पर विराजमान चन्द्रकला को पकड़ कर निचोड़ दिया और देवताओं से कहा कि यह अमृतमयी चन्द्रकला मृत्यु की औषधि है। चन्द्रकला को निचोड़ने से वहाँ एक परमपावनी धारा बह निकली और वही अमरावती नामक पवित्र नदी के रूप में विख्यात हुई[3]। उस समय अमृत की जो बूँदे भगवान् शिव के शरीर पर पड़ीं वे भस्मरूप में परिणत हो गईं, और अमृत की शेष बूँदे प्रवाह बनकर बह निकली। चन्द्रकला के प्रेमस्वरूप उन अमृत बिंदुओं के स्पर्श से भगवान् शिव भी द्रवित होने लगे[4]। परमकारुणिक भगवान् के उस द्रवित रूप को देखकर समस्त देवताओं ने बारम्बार प्रणाम किया।

देवताओं को प्रणाम करते देखकर भगवान् शिव ने अपनी परमपुण्य वाणी से कहा कि इस पवित्र गुफा में तुम सभी ने मेरे प्रेमस्वरूप लिङ्ग का दर्शन कर लिया है, इसलिए मेरे अनुग्रह से आज के बाद मृत्यु तुम्हें छू भी नहीं पायेगी। तुम सब यहीं पर अमर होकर मेरे सायुज्य (शिवसायुज्य /

---

[1] मृत्युस्तानग्रसत्सर्वान् देवानपि सवासवान्॥ भृङ्गीशसंहिता-१४.१०.१०॥

[2] देवास्ते मृत्युना ग्रस्ता व्याकुला ह्यभवन् प्रिये।
समेत्य शरणं जग्मुः शरण्यं परमेश्वरम्॥
तुष्टुवुः परमप्रीत्या शङ्करं तमनाशनम्॥ भृङ्गीशसंहिता-१४.१०.११-१२॥
प्रत्यूचुस्तं हरं मृत्युर्ग्रसतीति बलाद्धि नः॥ भृ.सं.- १४.१०.२३॥

[3] गृहीत्वा शिरसा तत्र हरश्चन्द्रकलां स्वयम्।
सम्पीत्य* देवानवदन्मृत्युभेषजपीडनात्॥ सम्पीड्य
या निस्सृता च धारा तत्र पारमिका प्रिये।
सैव भूता नदी पुण्या नाम्ना वै ह्यमरावती॥
ये बिन्दवश्च्युता देवि शरीरेऽमृतबिन्दवः।
ते भस्मरूपतां प्राप्य च्युताश्चाशनतां गताः॥ भृ.सं.- १४.१०.२५-२७॥

[4] प्रेम्ना* तेषां महादेवि शिवोऽपि द्रवतामगात्॥ प्रेम्णा
ते दृष्ट्वा तु शिवं तत्र द्रवीभूतं महेश्वरि।
पुनः पुनः प्रणेमुस्ते भवकारुणिकं परम्॥ भृ.सं.- १४.१०.२८-२९॥

Scanned by CamScanner

शिवभाव) को प्राप्त करोगे[5]। तभी से देवताओं को अमर नाम से भी पुकारा जाता है। आज से मेरा यह परमपावन परमोत्तम लिङ्ग तीनों लोकों में "अमरेश्वर"[6] अथवा "अमरनाथ" नाम से विख्यात होगा। सभी देवताओं ने अमरेश्वर लिङ्ग को दण्डवत् प्रणाम किया और प्रदक्षिणा करके अपने अपने स्थान को लौट आये।

इस प्रकार भगवान् अमरेश्वर (अमरनाथ) देवों को अमरत्व का वरदान देकर तब से उसी पवित्र गुफा में लीन होकर विराजमान हैं। भृङ्गीशसंहिता में विविध उपन्यासपूर्वक "अमरेश्वर" नामकरण की बड़ी सुन्दर व्याख्या की गई है[7]। यथा -

- ✻ अमावस्या से पूर्णिमा तक चढ़ती चन्द्रकला को लेकर देवताओं के कल्याण की कामना से लिङ्गरूप भगवान् शिव ने मृत्यु का नाश किया था। इसलिए उन्हें "अमरेश्वर" नाम से जाना जाता है।
- ✻ लिङ्गरूप भगवान् शिव ने देवताओं को मृत्युहीन (अमर) कर दिया था। इसलिए उन्हें "अमरेश्वर" कहा जाता है।
- ✻ भगवान् शिव स्वयं लिङ्गरूप दर्शन देने मात्र से ही भवरोग (संसाररूपी जन्म-मृत्यु रोग) को हर लेते हैं। इसलिए उन्हें "अमरेश्वर" कहा जाता है।
- ✻ लिङ्गरूप भगवान् शिव अमावस्या से पूर्णिमा तक चन्द्रकला को ग्रहण करते हैं। अर्थात् अन्धकाररूपी मृत्यु को प्रकाशरूपी अमरत्व में परिणत कर देते हैं। इसीलिए तन्त्रविशेषज्ञ विद्वान् उन्हें "अमरेश्वर" नाम से जानते हैं।
- ✻ लिङ्गरूप भगवान् शिव असुरों (आसुरी शक्तियों) तथा जरा-मरण आदि का नाश करके मोक्ष और ऐश्वर्य प्रदान करते हैं। इसलिए उन्हें "अमरेश्वर" कहा जाता है। "अमरेश्वर" नामक यह रसमय लिङ्ग महाप्रेम से उद्भूत हुआ है जो कि नित्य समरसता को देने वाला है।

इतना ही नहीं, रसमय लिङ्गरूप भगवान् अमरेश्वर के दर्शन, दर्शन के नियम[8], यात्रा आदि की महिमा एवं उससे प्राप्त होने वाले फल[9] का भी बड़ा सुन्दर सुविशद वर्णन भृङ्गीशसंहिता में मिलता है। जैसे कि -

---

[5] यस्माद् भवद्भिर्दृष्टं मे प्रेमलिङ्गं दरीगृहे।
तस्मान्न मृत्युर्युष्मान् वै धार्यते मदनुग्रहात्॥
इहैव अमरा भूत्वा गच्छध्वं शिवयुज्यताम्॥ भृ.सं.- १४.१०.३१-३२॥

[6] इतः प्रभृति मे लिङ्गममरेशाख्यमुत्तमम्।
पुण्यं परमकं देवास्त्रिलोकख्यातिमेष्यति॥ भृ.सं.- १४.१०.३३॥

[7] भृ.सं.- १४.१०.३५-४१

Scanned by CamScanner

- जो मनुष्य अमरेश्वर की यात्रा करके अमरावती के जल में स्नान करता है और भस्म से अपने अङ्गों पर लेप करता है, वह मोक्ष को प्राप्त करता है[10] ।
- गुफा में पँहुच कर जो अत्यन्त हर्षित होते हुए ताण्डव (शिवनृत्य) करता है, वह मनुष्य परमपावन होकर अमर ही कहलाता है। देवतुल्य हो जाता है[11] ।
- भस्म लगाये बिना रसमय लिङ्ग का दर्शन नहीं करना चाहिए। अङ्गों पर भस्म का लेप किये बिना जो रसमयलिङ्ग का दर्शन करता है, वह जन्म-जन्मान्तर में कुष्ठी (कोढ़ी) बनता है[12] ।
- यात्रा किये बिना ही रसमय लिङ्ग का दर्शन नहीं करना चाहिए अन्यथा घोर नरकों की प्राप्ति होती है[13] ।
- शिवनृत्य (ताण्डव) किये बिना जो पवित्र गुफा में स्थित रसमय लिङ्ग का दर्शन करता है, वह तीर्थद्रोही कहलाता है[14] ।

पापों से मुक्ति-

- अमरेश्वर (अमरनाथ) के दर्शन करते ही महापापी भी पापमुक्त हो जाते हैं।
- भ्रूणहत्या करने वाला, गुरुतल्पगामी, सुरापान करने वाला, स्वर्ण चुराने वाला, गोमांस खाने वाला, नशाखोर, देवयज्ञ को छोड़ने वाला, बालघाती, महाक्रोधी, लोभ मोह से ग्रस्त, परस्त्रीगामी, छिद्रान्वेषी, सज्जनों की निन्दा करने वाला, दम्भी, अल्पबुद्धि एवं झूठ बोलने वाला भी अमरनाथ का दर्शन करते ही अपने पापों से मुक्त हो जाता है[15]।

फलप्राप्ति-

- सैंकडों चान्द्रायण एवं सान्तपन व्रतों से जो पुण्यफल की प्राप्ति होती है, वह पुण्यफल अमरेश्वर के दर्शनमात्र से मिल जाता है[16]।

---

[8] भृ.सं.- १४.१०.४२-४९
[9] भृ.सं.- १४.१०.५०-६३
[10] भृ.सं.- १४.१०.४२
[11] भृ.सं.- १४.१०.४३
[12] भृ.सं.- १४.१०.४५
[13] भृ.सं.- १४.१०.४६
[14] भृ.सं.- १४.१०.४७
[15] भृ.सं.- १४.१०.५०-५४
[16] भृ.सं.- १४.१०.५५

Scanned by CamScanner

- कुरुक्षेत्र, प्रयाग और नैमिषारण्य में करोडों गऊएँ दान करने का जो फल है, वह अमरेश्वर के दर्शनमात्र से मिल जाता है[17]।
- जो व्यक्ति सूक्ष्म (महीन) श्वेतवस्त्र, मृगकुंकुम, चन्दन, कपूर, स्वर्णपुष्प अथवा रजत (चाँदी) के पुष्पों से इस दिव्य अमृतमय (सुधामय) लिङ्ग की पूजा करता है, वह रुद्र-स्वरूप हो जाता है। उसको फिर जन्म नहीं लेना पड़ता[18]।
- स्त्री अथवा पुरुष जो कोई भी इस उत्तम लिङ्ग की पूजा करता है, वह शिवसायुज्य को प्राप्त करता है - जहाँ (शिवसायुज्य में) किसी भी प्रकार का शोक नहीं होता[19]।
- गुफा के अन्दर गिरने वाली अमरधारा का पान करने वाला मनुष्य भी शिवस्थान(शिवसायुज्य) को पाता है - जहाँ उसके समस्त कृत-अकृत कर्मभाव शेष नहीं रहते[20]।
- अमरनाथ के दर्शन ले लिए जो व्यक्ति अपने घर से निकलता है तो उसे कदम कदम पर अश्वमेध यज्ञों का फल प्राप्त होता है[21]।
- वहाँ के कपोतों (कबूतरों) एवम् अन्य पक्षियों को देखकर जयकार करने वाला व्यक्ति रुद्रतुल्य हो जाता है[22]। ये कबूतर वस्तुतः शिव के ही "महाडामरुक" नामक गण हैं। इस सन्दर्भ में एक कथा[23] आती है कि -

  एक बार जब भगवान् धूर्जटि (शिव) सन्ध्याकालीन ताण्डव नृत्य कर रहे थे तो आपस में होड़ लगाते हुए (स्पर्धा करते हुए) शिवगणों (महाडामरुक गण) ने "कुरु कुरु, कुरु कुरु " कहना शुरु कर दिया। इससे शिव ने क्रुद्ध होकर उन्हें शाप दिया कि तुम सब ने "कुरु कुरु, कुरु कुरु" बोलते हुए मेरे नृत्य में विघ्न डाला है। इसलिए आज से तुम सब कबूतर बनकर चिरकाल तक यहीं पर निवास करोगे तथा विघ्नापहारी बनकर "कुरु कुरु, कुरु कुरु" ही करते रहोगे। इस तीर्थ पर तुम विघ्न-अपहारक बनकर रहोगे। इस तीर्थ पर आने वाले समस्त भक्तजनों के विघ्न तुम्हें दूर करने होगें।

  इस प्रकार इन कबूतरों के दर्शन से भी विघ्नों एवं पापों का नाश होता है। परमार्थ की कामना करने वाले भक्तों को इनका दर्शन अवश्य करना चाहिए। इन कबूतरों के दर्शन किये बिना यात्रा करने वाले को तीर्थद्रोही कहा गया है।

---

[17] भृ.सं.- १४.१०.५६

[18] भृ.सं.- १४.१०.५७-५९

[19] भृ.सं.- १४.१०.६०

[20] भृ.सं.- १४.१०.६२

[21] भृ.सं.- १४.१०.६३

[22] भृ.सं.- १४.१०.६४

[23] भृ.सं.- १४.१०.६५-७४

Scanned by CamScanner

- इसी प्रकार अमरावती में स्नान करने की भी अद्वितीय महिमा बतलाई गई है। अमरावती में स्नान करने वाला मनुष्य तत्क्षण समस्त संकटों से छूट जाता है तथा अमर-ऐश्वर्य (देवतुल्य अनश्वर ऐश्वर्य) को प्राप्त करता है[24]।

उपर्युक्त चर्चा में महालिङ्गस्वरूप भगवान् अमरनाथ की अनिर्वचनीय अद्वितीय महिमा केवल अँशमात्र ही समा पाई है। रसमय लिङ्ग, महालिङ्ग, अमृतलिङ्ग, सिद्धिलिङ्ग, बुद्धिलिङ्ग, शुद्धिलिङ्ग तथा वृद्धिलिङ्ग इत्यादि शब्दों में इस परमपावन दिव्य लिङ्ग की महिमा बतलाई गई है। उपसंहार रूप में अधोलिखित कतिपय श्लोकों का उद्धरण देना उचित होगा -

कलिकल्मषघोरनाशनं रसलिङ्गं समुदीरितं प्रिये।
पशुपाशविनाशकारकममरेश्वरनामकं परम् ॥[25]

सिद्धिलिङ्गमिदं देवि बुद्धिलिङ्गमिदं प्रिये।
शुद्धिलिङ्गमिदं प्रोक्तं वृद्धिलिङ्गमिदं प्रियम् ॥[26]

विना ध्यानं विना दानं विना योगं यदिच्छसि।
तदाश्रयस्व देवेशि लिङ्गममरसंज्ञकम् ॥[27]

त्रैलोक्ये यानि तीर्थानि स्थानानि जगदम्बिके।
अमरेशाख्यलिङ्गस्य लिङ्गं रसमयं प्रिये ॥[28]

अमरेशसमं लिङ्गं दिव्यं भूम्यन्तरिक्षगम्।
महापापहरं देवि सद्यः कल्मषनाशनम् ॥[29]

भूयो भूयः किमुक्तेन नरः पातकवान् कलौ।
अमरेशं समाश्रित्य मुक्त एव न संशयः ॥[30]

॥ इति शिवमस्तु ॥

[24] भृ.सं.- १४.१०.७५-७६
[25] भृ.सं.- १४.१०.७७
[26] भृ.सं.- १४.१०.७९
[27] भृ.सं.- १४.१०.८१
[28] भृ.सं.- १४.१०.८५
[29] भृ.सं.- १४.१०.८६
[30] भृ.सं.- १४.१०.८७

Scanned by CamScanner